दिनांक :- 05-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड इतिहास

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- चतुर्थ

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन में पश्चिमी साम्राज्यवाद का प्रसार

1879 में चीन के योग्य राजनीतिज्ञ ली हुंग-चांग ने कोरिया के अधिकारियो को परामर्श दिया 'जहर का मुकाबला जहर के साथ करना चाहिए' अर्थात उसने कोरिया के अधिकारियो को यहाँ कहा कि वे पश्चिमी देशो से संधियाँ करके जापान के नापाक इरादो को विफल कर सकते है। ली के परामर्श को अक्षरशः मान

लिया गया। कोरिया ने 1874 और 1882 में पश्चिमी देशों से अनेक संधियाँ कर लीं। जापान को यह अत्यंत ही बुरा लगा। वह कोरिया में अपना उल्लू सीधा करने के लिए वहाँ की सरकार के विरुद्ध देश में आन्तरिक विद्रोह उत्पन्न करने के प्रयास में जुट गया।

इसी बीच चीन ने कोरिया के प्रति अपना रुख बदलना आवश्यक समझा। उसने वहां अपनी स्थिति दृढ़ करने के लिए युवान-शी-काई को भेजा। युवान अपनी योग्यता के लिए प्रसिद्ध था और वह चीन का बलवान आदमी कहा जाता था। कोरिया की राजधानी सियोल पहुँचते ही युवान ने जापान के विरुद्ध अपनी करवाईयाँ शुरू कर दी। प्रारंभ में उसे तो कुछ सफलता भी मिली। उसके प्रयासों के फलस्वरूप चीन और कोरिया के समुद्रवर्ती सीमा शुल्क एक कर दिए गए।

Scanned with CamScanner

जापान कोरिया में चीन का प्रभाव-विस्तार फूटी आँखों भी देख नहीं सकता था। उसकी छाती पर साँप लोटने लगा और वह कोरिया में चीन का प्रभाव कम करने के लिए आकाश-पाताल एक करने लगा। उस समय कोरिया के राजदरबार में दो दल थे। प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी। प्रगतिशील दल जापान का समर्थक और नवीन विचारों का स्वागत करता था। यह दल जापान की तरह कोरिया का पश्चिमी करण चाहता था। प्रतिक्रियावादी दल चीन का समर्थक था जो प्राचीन परम्पराओं में आबद्ध रहना चाहता था। यह किसी भी प्रकार के परिवर्तन या प्रगति का घोर विरुद्ध था। जापान प्रगतिशील दल की मदद से राज्य में अशांति उत्पन्न करने की साजिश में पिल पड़ गया। तनाव बढ़ता गया तथा 1885 तक वहाँ की स्थिति

गम्भीर हो गई! किंतु इस समय कोरिया के प्रश्न पर चीन और जापान लड़ना नहीं चाहते थे। अतः कोरिया के मामले को सुलझाने के लिए प्रसिद्ध जापानी राजनीतिज्ञ काउंट इतो पीकिंग पहुँचा। वहाँ उसने ली-हुंग-चांग-चांग से बातचीत की। 18 अप्रैल, 1885 से तिन्तसीन में ली-इतो समझौता सम्पन्न हुआ। यह चीन जापान के सम्बंध के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय था। दोनों इस समझौते द्वारा चार महीने के अन्दर कोरिया से अपनी-अपनी सेनाएँ वापस बुलाने के लिए सहमत हो गए। दोनों कोरिया के आन्तरिक सेना का पुनर्गठन किया जाए, लेकिन इसमें चीन और जापान कोई भाग न लें आवश्यकता पड़ने पर दोनों में से कोई भी वहां अपनी सेना एक दूसरे की लिखित अनुमति के पश्चात् ही भेज सकते हैं। सेना भेजने पर उसे

यथासम्भव शीघ्र ही वहां से बुला ली जाएगी।

ली-इतो समझौता जापान के लिए एक महान् कूटनीतिक विजय थी। इसने कोरिया में चीन की कार्यवाई की स्वतंत्रता को सीमित कर दिया। वह अब जापान की पूर्वानुमति के बिना अपनी सेना वहां नहीं भेज सकता था। वह कोरिया को अधीनस्थ राज्य मानता था। लेकिन अब उसकी इस स्थिति में परिवर्तन आ गया। कोरिया अब चीन की कृपा पर आश्रित नहीं था। वहां जापान की अधिकारिता कायम हो गई थी। इससे कोरिया पर चीन का आधिराज्य समाप्त हो गया। चीन ने कोरिया के प्रति अपनी उदासीनता की नीति के परिणामों को समझने में गलती की जिसका जापान ने पूरा लाभ उठाया।

कोरिया में जापान की सफलता से प्रोत्साहित होकर अमरीका भी कोरिया से संधि करने के प्रयास में लग गया।

Scanned with CamScanner

चीन की सहायता से 1882 में अमरीका ने कोरिया से संधि कर ली। अमरीका के बाद ब्रिटेन, जर्मनी, इटली रूस तथा फ्रांस ने भी कोरिया में पृथक-पृथक संधियों द्वारा व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त की।

1894-95 के चीन जापान युद्ध में चीन पराजित हुआ और उसे अपमानजनक शिमोन्सकी की संधि करनी पड़ी। इससे चीन के राजनीतिक जीवन को काफी प्रभावित किया। चीनी जनता की यह मान्यता दृढ़ हो गई कि मंचूवंश से ईश्वरीय अनुकम्पा समाप्त हो गई है। उसकी कमजोरी का जनाजा निकल गया। अब पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों के दृष्टिकोण में चीन, एशिया का बीमार आदमी (Sickman of Asia) बन गया। अब वे वहां अपना-अपना प्रभाव क्षेत्र कायम करने लगे। इस प्रकार चीनी तरबूज का कतरन शुरू हो गया। साम्राज्यवादियों की पारस्परिक होड़ बढ़ती गई जिसे

Scanned with CamScanner

(सुविधाओं का युद्ध (Battle of concessions) भी कहते है। इससे चीन की क्षेत्रीय अखंडता खतरे में पड़ गई। चीन का बटँवारा - इतिहास निम्नलिखित तथ्य बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है!

रूस :- रूस काफी समय से चीन के उत्तर व पश्चिमी दोनो ओर अपना क्षेत्रीय प्रसार करने को उत्सुक था और वह कछुए की चाल चल रहा था। उसने शिमोन्स्की की संधि में संशोधन के लिए जापान पर दबाव डाला और चीन के प्रति अपनी सद्भावना व्यक्त की। रूस ने यह भी आश्वासन दिया कि वह भविष्य में चीन में जापानी प्रसार का विरोध करेगा। अतः पीकिंग रूस की ओर से निश्चित था। मई 1896 में रूसी जार के सिंहासनारोहण समारोह में भाग लेने के लिए मंचु दरबार से ली-हुंग-चांग को सेंट पीटर्सबर्ग भेजा गया।

Scanned with CamScanner